शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 2, Issue 1 & 2, (Joint Issue)
15 Jan-15 July, 2011

‘कबीर और समकालीन इतिहास’ : प्रो० ओमराज की अधुनातन, अप्रतिम शोध कृति

डॉ० महेश ‘दिवाकर’
डी० लिट्, अध्यक्ष एवं एसोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुलाब सिंह हिन्दू (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, चान्दपुर-स्याऊ, बिजनौर

www.shodh.net

‘कबीर और समकालीन इतिहास’ : प्रो० ओमराज की अधुनातन, अप्रतिम शोध कृति

डॉ० महेश ‘दिवाकर’

हिन्दी के भक्तिकाल की निर्गुणधारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रवर्तक कवि और अप्रतिम समाज सुधारक कबीरदास के जन्म और मृत्यु का समय भले ही विवादास्पद रहा है लेकिन उनके अपने अनुभव, चिन्तन और घुमक्कड़ी से रचित काव्य से हिन्दी साहित्य के प्रेमी अपरिचित नहीं हैं। यही कारण है कि भक्तिकाल की सगुणशाखा के प्रमुख स्तम्भ-तुलसीदास और सूरदास से कम शोधकार्य कबीरदास पर नहीं हुआ है। भारत के अनेकानेक विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयी हिन्दी विभागों ने कबीर पर प्रचुर शोध कार्य करके स्वयं को गौरवान्वित किया है। कबीर साहित्य के अध्ययन और शोध की यह गम्भीर एवं पवित्र गंगा आज भी निरन्तर प्रवाहित हो रही है। तीन हजार से अधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ और शोध प्रबन्ध कबीर के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व को लेकर रचे जा चुके हैं।

शोध एवं अध्ययन की इसी श्रृंखला में सन 2011 की सद्य: उदय में प्रोफेसर ओमराज द्वारा प्रणीत ‘कबीर और समकालीन इतिहास’ नामक एक आलोचनात्मक शोधा कृति का हिन्दी जगत में प्रादुर्भाव हुआ है। इस कृति पर कुछ आगे लिखने से पूर्व प्रोफेसर ओमराज का सांक्षिप्त परिचय देना संगत होगा। यद्यपि प्राफेसर ‘ओमराज’ हिन्दी-उर्दू भाषाई-सृजन के क्षेत्र में किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं, तथापि आलोच्य कृति के ऐतिहासिक सन्दर्भ और कबीर साहित्य के वैज्ञानिक विश्लेषण के सन्दर्भ में भी प्रो0 ओमराज का संक्षिप्त परिचय देना अपेक्षित है।

प्रोफेसर ‘ओमराज’, जिनका वास्तविक नाम प्रोफेसर ओम प्रकाश गुप्ता है, का जन्म 9 जनवरी, सन् 1945 को उत्तरी भारत के प्रख्यात जनपद एवं मुस्लिम रियासत-रामपुर में एक सामान्य वैश्य परिवार में हुआ, जहाँ अध्ययन और अध्यापन से अधिक व्यावसायिक दक्षता पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। प्रोफेसर ओमराज ने पैतृक व्यवसाय को ताक में रखकर स्व0 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की अधोलिखित काव्य पंक्तियों को सार्थकता प्रदान की-

‘‘लीक पर वे चलें
जिनके चरण
दुर्बल औ’ हारे हैं
हमें तो जो हमारी यात्रा से बने,
ऐसे अनिर्मित पंथ प्यारे हैं।’’१-‘लीक पर वे चलें’

प्रोफेसर ओमराज ने सन् 1969 में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के मेरठ कालेज, मेरठ से स्नातकोत्तर इतिहास की परीक्षा में न केवल प्रथम श्रेणी प्राप्त की अपितु विश्वविद्यालय में भी इतिहास विषय में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। तत्पश्चात् वे उ0प्र0 के राजकीय महाविद्यालय में इतिहास के प्राध्यापक हो गये और उत्तर प्रदेश की उच्च शिक्षा सेवा से जुड़े, विभिन्न राजकीय महाविद्यालयों में इतिहास के प्रोफेसर रहे और प्राचार्य के पद को भी सुशोभित किया। यही नहीं, प्रोफेसर ओमराज सन् 1998 से सन् 2001 तक क्षेत्रीय उच्च शिक्षा निदेशक बरेली रहे, जिसके अन्तर्गत मुरादाबाद और बरेली मण्डल के क्रमश: चार-चार जनपदों से जुड़े स्नातक ओर स्नातकोत्तर महाविद्यालय आते हैं। प्रोफेसर ओमराज से मेरा परिचय इसी समय हुआ, क्योंकि मैं उनके प्रशासनिक क्षेत्र के अन्तर्गत स्थित गुलाब सिंह हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चांदपुर-स्याऊ (बिजनौर) उ0प्र0 के हिन्दी विभाग में रीडर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत था। उनकी कार्यशैली गज़ब की रही। वे कुशल प्रशासक, कर्तव्य परायण और ईमानदार छवि वाले अधिकारी रहे। वे किसी भी दबाव के आगे झुकते नहीं थे। संभवत: अपने कार्यकाल में उन्होंने अपनी जानकारी में कोई भी ग़लत कार्य नहीं किया और न ही कोई ग़लत आदेश महाविद्यालयों को दिया। उनसे छोटे से छोटा कर्मचारी भी मिलकर अपनी पीड़ा कह सकता था। वे उसे ध्यान से सुनते थे और अन्याय, कदाचार, भ्रष्टाचार उनके कार्यकाल में महाविद्यालयों में नहीं पनपा। संभवत:

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 2, Issue 1 & 2, (Joint Issue)
15 Jan-15 July, 2011

'कबीर और समकालीन इतिहास' : प्रो० ओमराज की अधुनातन, अप्रतिम शोध कृति

डॉ० महेश 'दिवाकर'
डी० लिट्, अध्यक्ष एवं एसोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुलाब सिंह हिन्दू (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, चान्दपुर-स्याऊ, बिजनौर

www.shodh.net

इसीलिए, उन्हें अल्पकाल तक ही इस पद पर बने रहना पड़ा। अस्तु, जब तक वे इस पद पर रहे विवादों से दूर रहे। वे चाहते तो अपने इसी संक्षिप्त कार्यकाल में अकूत धन एकत्रित कर सकते थे। यही नहीं, इसी धन के द्वारा अपने उच्चाधिकारियों को सन्तुष्ट करके क्षेत्रेय उच्च शिक्षा निदेशक के पद से ही सेवानिवृत्त हो सकते थे, लेकिन उन्होंने गन्दगी से समझौता नहीं किया और जिस अन्याय, अत्याचार, कदाचार, भ्रष्टाचार, शोषण के विरूद्ध आप आम आदमी के हित में अपनी रचनाओं में अपनी आवाज बुलन्द करते रहे, वही लड़ाई का अन्दाज़ और संघर्ष अपने इस पद पर रहकर भी जारी रखा। अत: उच्च शिक्षा निदेशालय ने उन्हें इस पद से कार्य मुक्त करके प्राचार्य के पद पर भेज दिया, जहाँ से वे प्राचार्य के पद से सन् 2005 की जनवरी में सेवानिवृत्त हो गये। निस्सन्देह, प्रोफेसर ओमराज का व्यक्तित्त्व जहाँ एक सफल और आदर्श प्राध्यापक, कर्तव्यनिष्ठ एवं कुशल प्रशासक का है वहीं वे मूल्यों के प्रति समर्पित, कथनी और करनी में समन्वय रखने वाले, एक आत्मीय और मिलनसार व्यक्ति का है। वे बड़े ही 'प्रैक्टिकल मैन' हैं। मूल्यों में उनकी गहन आस्था है। समकालीन उर्दू शायरी के क्षेत्र में तो उनकी एक अलग पहचान हिन्दुस्तान भर के शायरों में प्रोफेसर 'ओमराज' के रूप में है।

प्रोफेसर ओमराज का यही जीवनगत अनुभव, गम्भीर चिन्तन और मूल्यगत समर्पण उनकी सच्ची भावना के साथ उनके साहित्य में भी प्रकट हुआ है। 'थकी परियाँ' उनका एक मात्र प्रकाशित गीति-संग्रह है जिसमें उनकी कुछ गज़लें, मुक्तक और गीत समाहित हैं। इस काव्यकृति की चर्चा न केवल राष्ट्रीय स्तर पर हुई, अपितु कतिपय विदेशी साहित्यकारों और समालोचकों के कथन भी विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। इनमें कनाडा के प्रवासी महाकवि प्रो० हरिशंकर आदेश और नॉर्वे के साहित्यकार 'शरद आलोक' की प्रतिक्रियाएँ उल्लेखनीय हैं। यही नहीं, डॉ0 नामवर सिंह ने तो थकी परियाँ का विमोचन ही अपने कर-कमलों से किया। 'हंस', 'पाखी' 'वर्तमान साहित्य' और 'भाषा सेतु' में आपके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व की यथेष्ट चर्चाएँ भी समय-समय पर हुई हैं। आपने कई विदेशी काव्य कृतियों का भी अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत किया है।

बहुआयामी काव्य-प्रतिभा के धनी प्रोफेसर ओमराज ने उर्दू ग़ज़ल के क्षेत्र में हिन्दुस्तान भर में अपने सृजन और मुशायरों के माध्यम से विशिष्ट लोकप्रियता प्राप्त की है। इतिहास के तो वे प्रख्यात लेखक एवं सफल प्राध्यापक रहे ही हैं। अब हिन्दी के क्षेत्र में भी उनका लेखन कम उपलब्धियों से भरा नहीं है। हिन्दी में इधर थकी परियाँ के लोकार्पण के उपरान्त उनकी हिन्दी साहित्य जगत में व्यापक रूप से चर्चा हुई है।

अब 'कबीर और समकालीन इतिहास' शीर्षक से उनकी हिन्दी में सद्य: प्रकाशित साहित्यिक एवं ऐतिहासिक समालोचना एवं शोध पर आधाारित 206 पृष्ठों की कृति आयी है। (जिसने हिन्दी के समीक्षकों और शोध से जुड़े प्राध्यापकों को सोचने के लिए न केवल विवश कर दिया है अपितु कबीर साहित्य के परम्परावादी अध्येताओं और शोधार्थियों को तो शोध एवं समीक्षा की नयी दिशाएँ भी दिखायी हैं।

आलोच्य कृति में प्रोफेसर ओमराज द्वारा लिखित कबीर और उनके साहित्य पर छ: आलेख संजोएँ गये हैं, ये हैं-

अर्थ का अनर्थ : बाबू जी की विलाइत : सन्दर्भ कबीर ग्रन्थावली पृष्ठ-17 से 21 तक

फ़िरदौसी सूफ़ी सिलसिले में दीक्षित कबीर : मक्तू बाते सादी का दोहा कबीर के पद में पृष्ठ 22 से 43 तक

सिकंदर लोदी द्वारा कबीर का उत्पीड़न : एक परवर्ती गढंत- पृष्ठ 44 से 64 तक

कबीर की रचनाओं में समकालीन इतिहास पृष्ठ 65 से 189 तक

कबीर : कॉमणि, परनारी, नारी पृष्ठ 190 से 195 तक

सतीप्रथा और कबीर- पृष्ठ 196 से 206 तक

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि यदि इन शोध- समीक्षात्मक आलेखों पर पृथक-पृथक चर्चा की जाये तो प्रथकश: एक लघु शोध प्रबन्ध तैयार हो जायेगा। वस्तुत: प्रोफेसर ओमराज द्वारा लिखे गये ये शोध समीक्षात्मक आलेख जहाँ परम्परागत तथ्यों-कथ्यों के द्वारा नवीन खोजपूर्ण दृष्टिकोण की संपुष्टि करते हैं, वहीं प्रोफेसर ओमराज की कबीर के बारे में ऐतिहासिक एवं साहित्यिक गम्भीर सोच एवं अध्ययन को भी दरसाते हैं क्योंकि लेखक ने न केवल भरपूर एवं यथेष्ट उदाहरण भी दिए हैं, अपितु विस्तृत 'सन्दर्भ एवं टिप्पणी' भी

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 2, Issue 1 & 2, (Joint Issue)
15 Jan-15 July, 2011

'कबीर और समकालीन इतिहास' : प्रो० ओमराज की अधुनातन, अप्रतिम शोध कृति

डॉ० महेश 'दिवाकर'
डी० लिट्, अध्यक्ष एवं एसोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुलाब सिंह हिन्दू (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, चान्दपुर-स्याऊ, बिजनौर

www.shodh.net

प्रस्तुत की हैं। उदाहरणार्थ प्रथम आलेख में लेखक ने डॉ0 श्यामसुन्दर दास द्वारा सम्पादित कबीर ग्रन्थावली से निम्नलिखित दोहा लिया है।

कबीर भली मधुकरी, नाना विधि को नाजु

दावा काहू को नहीं, बड़ी देसबड़ राजु॥[२]

जबकि प्रोफेसर ओमराज द्वारा खोजा गया तथ्यों से युक्त कबीर का दोहा इस प्रकार है-

''मीढा खाँण मधुकरी, भाँति-भाँति को नाज।

दावा किसी ही का नहीं, बिन बिलाइत बढ़ राज॥''[३]

अपनी बात की संपुष्टि के लिए प्रोफेसर ओमराज ने यथेष्ट सन्दर्भ दिए हैं जिनके अध्ययन-मनन के उपरान्त प्रोफेसर ओमराज की खोज सटीक, नितान्त अधुनातन और यथार्थ से परिपूर्ण है।

प्रोफेसर ओमराज ने अपने दूसरे आलेख में हिन्दी के उन समीक्षकों और साहित्यकारों पर घोर कटाक्ष किया है जो कबीर को वैष्णव सम्प्रदाय का मानते हैं। प्रोफेसर ओमराज ने कबीर को फ़िरदौसी सम्प्रदाय का माना है और अपने इस कथन की प्रामाणिकता के लिए यथेष्ट तथ्यों एवं कथ्यों का ताना-बाना बुनते हुए सटीक व सार्थक प्रमाण भी दिए हैं।[4]

अपने तृतीय आलेख में प्रोफेसर ओमराज ने उन तथाकथित कबीर पन्थियों की सीधी खबर ली है जो कबीर को सिकन्दर लोदी द्वारा उत्पीड़ित मानते हैं और नयी-नयी भ्रामक किंवदन्तियाँ गढ़ कर सुनाते हैं। प्रोफेसर ओमराज ने इस आलेख में सीधे- सीधे कबीर पन्थियों से ही प्रश्न किया है ''क्या कबीर सिकंदर लोदी के समकालीन थे?''[5] लेखक ने ऐतिहासिक तथ्यों एवं कथ्यों के आलोक में ही यह भली-भाँति सिद्ध कर दिया है कि कबीर, सिकंदर लोदी के समकालीन नहीं थे। (अत: सिकन्दर लोदी द्वारा कबीर के उत्पीड़न का प्रश्न ही नहीं उठता है। प्रोफेसर ओमराज ने कबीर के उत्पीड़न को अतिवादी अनुयायियों द्वारा सुनिश्चित एवं योजनाबद्ध दुष्प्रचार माना है जिससे वे अपने गुरू सन्त को अलौकिक सिद्ध कर सकें। जबकि कबीर इस प्रकार के अन्धविश्वासों एवं चमत्कारों से दूर एक सहज व सरल सन्त कवि थे। इस सन्दर्भ में प्रोफेसर ओमराज की नयी खोजें, सन्दर्भ और टिप्पणी[6] अपने पाठकों को यथेष्ट सन्तुष्ट करती हैं।

चतुर्थ आलेख में 'कबीर की रचनाओं को समकालीन इतिहास' की कसौटी पर कसना लेखक का उद्देश्य रहा है, और अपने उद्देश्य की प्राप्ति में लेखक निस्सन्देह पूर्ण सफल भी रहा है। यह आलेख इस कृति का प्रमुख एवं अत्यन्त विस्तृत आलेख है, जिसका कलेवर पृष्ठ-65 से पृष्ठ-189 तक अर्थात् 125 पृष्ठों में संजोया है। प्रोफेसर ओमराज की स्पष्ट मान्यता है ''कि कोई कवि अपने युग के यथार्थ से कटकर कविता नहीं करता।''[7] प्रोफेसर ओमराज लिखते हैं ''कबीर हर समय अलख को लखने तथा निराकार का आकार स्पर्श करने की दीवानगी की स्थिति में नहीं रहे। वह एक सजग युग दृष्टा भी थे तथा अपने आस-पास घटित सभी सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक हलचलों से पूर्णतया अवगत थे।''[8]

प्रोफेसर ओमराज इतिहास के प्राध्यापक रहे हैं, और साहित्य से उन्हें गहरा लगाव है (अध्ययन और अध्यापन में उनकी गम्भीर निष्ठा है, वे गम्भीर चिन्तक और अध्यवसायी हैं, अत: अपनी बात को सिद्ध करने हेतु उन्होंने इस आलेख में कबीर साहित्य से प्रचुर शब्दावली प्रस्तुत करते हुए उसका समकालीन ऐतिहासिक आधार भी प्रस्तुत किया है और अपने अभिमत को प्रामाणिक करने हेतु अनेकश: विद्वानों के कथ्यों एवं ऐतिहासिक तथ्यों को उद्धृत किया है। फलत: इस आलेख का कलेवर एक सौ पच्चीस पृष्ठों में जा समाया है। उदाहरणार्थ समकालीन इतिहास के पुनरावलोकन एवं जुड़ाव को ध्यान में रखते हुए प्रोफेसर ओमराज ने तत्कालीन मुस्लिम आक्रमण, 'युद्ध प्रणाली,' 'घुड़सवार', 'राजकीय वैभव', 'हरम', 'दास प्रथा', 'किसान', 'सिंचाई के साधन- 'रहट', नेवगी', 'महता', 'काइथ', 'पटवारी', 'रइयत', रोटी दुर्लभ व मँहगी', खिचड़ी 'जौ की भूसी' कोरी तथा जुलाहा', करघा तथा रहटा' चरखा', 'दलाल', चटारा', 'तस्कर व सठौरी', 'इकताई' चौरी', 'बककाल', ऋण-पत्र', जुलाहों की विपन्नता', महता तथ महतो', 'बंजारा', 'टाँडा', नायक', तबल', 'मृदंग',

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 2, Issue 1 & 2, (Joint Issue)
15 Jan-15 July, 2011

'कबीर और समकालीन इतिहास' : प्रो० ओमराज की अधुनातन, अप्रतिम शोध कृति

डॉ० महेश 'दिवाकर'
डी० लिट्, अध्यक्ष एवं एसोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुलाब सिंह हिन्दू (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, चान्दपुर-स्याऊ, बिजनौर

www.shodh.net

रबाब', पखावज', 'किंगरी', सींगी', 'कंसा निसान', संख', 'नौबत, ढोला, दमामा', दुड़बड़ी', सहनाई, भेरि', कलाल', पनिहारिन' 'पालकी', 'अहेरी' बहेलिया', ग्वाड़ा', दहेड़िया', कुम्हार', 'धोबी', 'लोहार', 'सुनार', रंगरेज', 'बढ़ई' 'माली', 'तम्बोली', 'तेली', 'नाई', 'गंवार', 'बाजीगर', 'बगुचा', 'बटपार', 'चित्रकार', 'जुआरी', 'छींका', 'बाम्हन', आदि शब्दावली को कबीर के समकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिवेश से ग्रहण करते हुए कबीर के साहित्य में प्रयुक्ति की पुष्टि की है और समुचित सन्दर्भों और टिप्पणियों की प्रस्तुति करके अपने आलेख को उत्कृष्ट शोध का नमूना बना दिया है। इस सन्दर्भ में उनके ऐतिहासिक संन्दर्भ और टिप्पणी[9] विशिष्ट दृष्टव्य हैं। कुल मिलाकर लेखक का यह आलेख इस कृति का एवं शोध का मेरूदण्ड है। इस आलेख में लेखक का अकूत श्रम, गम्भीर अध्ययन, चिन्तन एवं मनन के साथ-साथ अनूठी शोध दृष्टि का भी बोध होता है।

आलोच्य कृति का पाँचवा आलेख 'कबीर : कॉमणि, पर नारी-नारी' सम्बन्धी में कबीर के आध्यात्मिक चिन्तन और घुमक्कड़ी मनोवृत्ति का गहरा परिचय मिलता है क्योंकि परम्परावादी आलोचक 'कबीर को नारी-विरोधी' मानते हैं। लेखक ने परम्परावादी आलोचकों की इस अवधारणा को न केवल गलत सिद्ध किया है, अपितु तथ्यों एवं कथ्यों का समन्वय करते हुए लेखक ने भली-भाँति यह सिद्ध कर दिया है कि ''कबीर का यह विरोध सापेक्षिक है, अर्थात् वह उस नारी के विरोधी हैं जो पुरुष को साधना मार्ग से विचलित करके उसे अपनी देह जाल में जकड़कर, पुरुष की बुद्धि तथा विवेक दोनों हर लेती है।''[10] ऐसी नारी को कबीर ने नरक का कुण्ड भी कहा है (लेकिन नारी-जाति को नहीं। कबीर के साहित्य से सटीक उदाहरण देकर लेखक ने उक्त अभिमत की पुष्टि भी की है। आलोच्य कृति का छठा आलेख 'सती प्रथा और कबीर' शीर्षक से अभिहित है। कबीर सती प्रथा के समर्थक अथवा विरोधी नहीं थे, ऐसी लेखक की मान्यता है, जबकि आलोचकों ने कबीर को सतीप्रथा का विरोधी कहा है। लेखक ने ऐतिहासिक एवं साहित्यिक तथ्यों एवं कथ्यों के आलोक में अपने अभिमत को प्रामाणिकता के शिखर पर पहुँचाया है। 'कबीर ने सती' शब्द का प्रयोग सद्चरित्र, लज्जा तथा मर्यादा शील स्त्री के लिए किया है।'[11] लेखक ने प्रस्तुत आलेख के द्वारा एक नितान्त नवीन अवधारणा प्रस्तुत की है जो स्तुत्य है।

सारत: कबीर और समकालीन इतिहास नामक आलोच्य कृति प्रोफेसर ओमराज की एक सफल समीक्षात्मक शोध कृति है जिसमें कबीर के जीवन और साहित्य से सम्बन्धित अनेकानेक शोधोपयोगी नये-नये तथ्यों और शोध बिन्दुओं की जानकारी मिलती है, जोकि कबीर साहित्य पर नये रूप में शोधकार्य करने हेतु एक नयी दिशा प्रदान करती है।

समग्र शोध कृति में शोधोपयुक्त भाषा का सहज एवं स्वाभविक प्रयोग हुआ है। लेखक के निष्कर्ष तलस्पर्शी हैं। कृति की महत्ता को देखते हुए इसका मूल्य 395/- संगत जान पड़ता है। हाँ, प्रस्तुत शोध-आलोचनात्मक कृति में आलेख दो, तीन, पाँच और छ: के अन्त में लेखक के अपने निष्कर्ष भी अपेक्षित हैं। संभवत: प्रकाशकीय विस्मरण के कारण ऐसा हुआ है। निस्सन्देह हिन्दी साहित्य जगत में यह कृति न केवल कबीर के सन्दर्भ में अपितु अन्य साहित्यकारों के सन्दर्भ में भी शोध समीक्षा के नए द्वार खोलने में सफल हुई है। हिन्दी जगत में इस कृति का यथेष्ठ सम्मान होगा, ऐसी मेरी कामना है। बधाई लेखक और प्रकाशक को।

सन्दर्भ:-

1. कविताएँ-2, सर्वेश्वर, पृष्ठ 39, **2.** कबीर और समकालीन इतिहास, प्रो0 ओमराज, पृ0- 20, **3.** वही, पृ0 18, **4.** वही, पृ0 35 से 43 के 'सन्दर्भ व टिप्पणी', **5.** वही, पृ0 45, **6.** वही, पृ0 57-64, **7.** वही, पृ0 66, **8.** वही, पृ0 66, **9.** वही, पृ0 166 से पृ0 189, **10.** वही, पृ0 191, **11.** वही, पृ0 204